क्रिया

क्रिया - अर्थ एवं भेद

कर्त्ता जिस कर्म को करता है, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे: जाना, खाना, पीना, खेलना, पढ़ना आदि सब क्रियाएँ हैं।

अब आपके मन में प्रश्न उठेगा कि क्रिया तो ठीक है, पर धातु क्या है?

धातु क्रिया का मूल शब्द है। संस्कृत में क्रिया के स्थान पर धातु रुप का प्रयोग होता है।

जैसे: गच्छति क्रिया 'गम्' धातु से बनी है। एक ही धातु से हम वचन, पुरुष तथा लकार (काल) के अनुरुप रुप बना सकते हैं।

क्रिया के भेद

क्रिया के दो भेद होते हैं:

(1) सकर्मक क्रिया

(2) अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया

ऐसी क्रियाएं जिनके साथ कर्म होना अनिवार्य होता है, सकर्मक क्रिया कहलाते हैं।

जैसे: बालकः पुस्तकं पठति।

बालक पुस्तक पढ़ता है।

अहं गृहं गच्छामि।

मैं घर जाता हूँ।

अकर्मक क्रिया

ऐसी क्रियाएं जिनके साथ कर्म की आवश्यकता नहीं होती, अकर्मक क्रिया कहलाते हैं।

जैसे: रानी यतते।

रानी यत्न करती है।

लता चलति।

लता चलती है।

क्रिया को समय के अनुसार हम विभिन्न रुपों में बांट देते हैं। इसे संस्कृत में लकार (काल) कहते हैं।

संस्कृत भाषा में पाँच लकार होते हैं:

1. लट् लकार (वर्तमान)

2. लृट् लकार (भविष्यत काल)

3. लङ् लकार (भूतकाल)

4. लोट लकार (आज्ञार्थक काल)

5. विधि लिङ्ग लकार (विधिसूचक काल)

यहाँ हम आपको लोट् लकार तथा विधि लिंङ्ग लकार के कुछ धातु रुपों का परिचय कराएंगे।

तत्पश्चात् हम इनके आधार पर कुछ वाक्य बनाएंगे।

लोट् लकार

लोट लकार को आज्ञार्थक काल भी कहा जाता है। इसमें आज्ञा, निवेदन, आग्रह से जुड़े क्रिया पद आते हैं।

यथा: स: पठतु।

वह पढ़ें।

आइए अब धातु रुप की सहायता से वाक्य बनाएं।

प्रथम पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
स:	धावतु	धावतम्	धावन्तु
स: धावतु	वह दौड़े		

तौ		तौ धावत । वे दोनों दौड़ते हैं।	
ते			ते धावन्ति । वे सब दौड़ते हैं।
मध्यम पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
त्वम्	धाव	धावतम्	धावत
त्वं धाव	तुम दौड़ो		
युवाम्		युवाम् धावतम् । तुम दोनों दौड़ो।	
यूयम			यूयम धावत। तुम सब दौड़ो।
उत्तम पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
अहम्	धावानि	धावाव	धावाम
अहं धावानि	मैं दौड़ूँ।		
आवाम्		आवाम् धावाव:। हम दोनों दौड़ें।	
वयम्			वयं धावाम:। हम सब दौड़ते हैं।

वयम् पठाम।

हम सब पढ़ें।

त्वं प्रश्नं पृच्छ।

तुम प्रश्न पूछो।

स: यतताम्।

वह यत्न करे।

इस प्रकार आप कुछ और वाक्य बनाने का प्रयास करें।

विधिलिंगलकार

जिस क्रिया पद द्वारा 'चाहिए' अर्थ, विधि सूचक, इच्छा आदि अर्थों का बोध होता है, विधि लिंग लकार कहलाते हैं।

यथा: त्वं दुग्धं पिबे:।

तुमको दूध पीना चाहिए।

अहं पठेयम्।

मुझे पढ़ना चाहिए।

बालका: जन्तुशालां पश्येयु:।

बच्चों को चिड़िया घर देखना चाहिए।

आइए अब धातु रुप की सहायता से कुछ और वाक्य बनाएं।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	स: धावतु । वह दौड़े।	तौ धावताम्। वे दोनों दौड़े।	ते धावन्तु। वे सब दौड़े।
मध्यम पुरूष	त्वम् धाव । तुम दौड़ो ।	युवाम् धावतम्। तुम दोनों दौड़ो।	यूयम् धावत। तुम सब दौड़ो।
उत्तम पूरूष	अहम धावाति । मैं दौड़ूँ।	आवाम् धावाव। हम दोनों दौड़ें।	वयम् धावाम। हम सब दौड़ें।
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
स:	पठेत्	पठेताम्	पठेयु:
स: पठेत्	उसको पढ़ना चाहिए।		
तौ		तौ पठेताम्। उन दोनों को पढ़ना चाहिए।	
ते			ते पठेयु:। उन सबको पढ़ना चाहिए।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
त्वम्	पठे:	पठेतम	पठेत
त्वं पठे:	आपको पढ़ना चाहिए।		

युवाम्		युवां पठेतम्। आप दोनों को पढ़ना चाहिए।	
यूयम्			यूयं पठेत। आप सबको पढ़ना चाहिए।
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम्	पठेयम्	पठेव	पठेम
अहं पठेयम्।	मुझे पढ़ना चाहिए।		
आवाम्		आवां पठेव। हम दोनों को पढ़ना चाहिए।	
वयम्			वयं पठेम। हम सबको पढ़ना चाहिए।

	1	2	3
I	A	B	C
a			
b			
c			
	1	2	3
II	A	B	C
a			
b			
c			

	1	2	3
III	A	B	C
a			
b			
c			

I = प्रथम पुरुष, a = स:, तौ, ते

II = मध्यम पुरुष, a = त्वम्, युवाम्, यूयम्

III = उत्तम पुरुष, a = अहम्, b = आवाम्, c = वयम्

1 = एकवचन, 2 = द्विवचन, 3 = बहुवचन

आप यदि उपरोक्त तालिका के आधार पर वाक्य बनाएंगे तो गलती बिल्कुल नहीं होगी।